"सिर बदले जो पाइये"

दुनियाँ युगों युगों से उस पारब्रह्म को पाने के लिए तपस्या कर रही है, बार-बार जन्म लेना और मरना इसी आवागमन में फँसी है। उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति से ही मुक्त हो सकती है। आज तक दुनियाँ के जीवों को उनकी प्राप्ति होती भी कैसे मुक्ति दिलाने वाले इस दुनियाँ में आए ही नहीं थे। इस २८ वें कलयुग में आकर अपनी पहचान करवा रहे हैं, कि रूहों मैं तुम्हारे वास्ते आया हूँ।

प्यारे सुन्दर साथ जी, अब श्री राज जी और उम्मत मिल जाये तो रूह को और क्या चाहिए? स्वयं को कुर्बान करने से अगर धनी मिलते हैं तो सौदा बहुत सस्ता है। जैसा कि धनी ने फरमाया भी है :-

सिर बदले जो पाइये, महमद दीन इस्लाम।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम।।

खुलासा प्र० २५/५३

हम एक बार श्री राज जी की तरफ कदम बढ़ा कर देखें तो सही श्री राज जी किस तरह से अर्श की सब न्यामतें लेकर मोमिन के दिल में अर्श कर बैठ जाते हैं। और फिर उस रूह मोमिन के दिल से एक पल के लिये भी धनी के चरण जुदा नहीं हो पाते।

दिल अर्स मोमिन कहया, जामे अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहबूब की सूरत।

खुलासा प्र. ३ चौ. ३१

जो मोमिन धनी की राह में अपने आप को फना कर देते हैं। श्री राज जी उस रूह पर फिदा हो जाते हैं। यद्यपि रूहों ने आकर इस खेल में भूल जाने का जो गुनाह किया धनी फिर भी उनके सब गुनाहों को भुला कर उस दिल में अर्स करते है। जिन्होंने अपने आप को धनी चरणों पर कुर्बान कर दिया।

मोमिन के मुँह ऊपर कुलफ, लिख्या माहें फुरमान।
इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अरस कर बैठे मेहरबान।।

खुलासा प्र. ३ चौ. ७०

वाणी में धनी ने और भी फुरमाया :-

बका चाहे सो फना होवे, बिना फना बका न पावे कोय।।

श्री राजी महाराज की मोमिनो से एक ही चाहत है कि इस मुरदार दुनियाँ को छोड़कर मेरी (धनी की) और अपनी पहचान कर, धनी की राह पर कुर्बान हो दुनियाँ के लिए सिर्फ कर्ज अदा करें। दुनियाँ के लिए मरें नहीं, मरना तो अपनी धनी के लिए है।

Nijanand App

जीवते मारिए आपको, शब्द पुकारत हक।
जो जीवत न मरेगें मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक।।
छोटा क्यामतनामा प्र० १ चौ० १०४

मोमिन और दुनियां में यही तो फर्क है। दुनियाँ वाले दुनियाँ के लिए मरते है, खाना-पीना-सोना-कमाना और आराम ये दुनियां वालो के काम है मोमिन तो अपने धनी पर तन्-मन-धन समर्पित कर देते है। क्यों कि मोमिन के दिल में हक की बैठक है, और दुनियाँ वालों के दिल में अबलीस की मोमिन तो हक और उम्मत के सिवा कुछ नहीं चाहते दुनियां की तरफ से मुरदार रहते है। मोमिनों के पास हक का इलम है। धनी की व अपने सन्मन्ध की पहचान कर धनी के चरणों पर जितना फना हुए धनी को उतना ही अपने करीब पाया। जैसा कि वाणी में भी फुरमाया :-

जाको हक इलम पोहोचियां, तिन हुआ सब दीदार।
अन्तर कछु न रहया, वह पोहोच्यां नूर के पार।।
छोटा क्या प्र. १ चौ. ८१

वह यहाँ भी थनं धनं और उत भी थनं धनं

जो होय आए मोमिन रूह सो, सो कबूं न ओर से होय।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोय।।
छो० क्या० प्र. १/४१

इस तरह से जिसने अपने आप को धनी के चरणों पर फना कर दिया, धनी ने उस दिल को अर्स किया और परमधाम की सब न्यामते लेकर बैठ गये।

सरकार श्री का उदाहरण हमारे सामने है :- सरकार श्री ने अपने आप को धनी के चरणों में फंना किया, धनी ने उनके दिल को अर्स किया और परमधाम की शफकत, बरकत, मेहर, इश्क, इलम, जोश और सब न्यामतें लेकर धनी आपके दिल में विराजमान हुए। उनके अर्स दिल में जिन्होंने धनी की पहचान की वह सरकार श्री से आ जुड़े। धनी के प्यारे रूह, मोमिन जिसकी चाहत है वह अपने धनी की बातें और परमधाम की गुझ खिलवत और वाणी के गुझ भेदों को उन अर्श दिल में बैठे श्री राजी की बातों से सभी खिचें चले आये, प्रभावित हुए बिना न रह सके।

रतनपुरी में रूहों का मिलावा इकट्ठा होने लगा। सरकार श्री ने स्वयं अपनी नहीं बल्कि मूल-मिलावें में बैठे मूल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी की पहचान करवाई। जिनसे परमधाम की आत्माओं का मूल सन्मन्ध है और इस तरह जागनी अभियान बढ़ता चला गया। अभी वह तन जिनके द्वारा धनी की पहचान हो रही थी, हमसे जुदा हो गया। और हम फिर से माया में अकेले रह गये। परन्तु जो रास्ता उन्होंने चल कर दिखाया है। अर्थात अपने को फना कर धनी को पाया" हमें भी हादी के बताये हुए उसी मार्ग पर चलना है। स्वयं को फना कर इतहीं बैठे अपने धनी को रिझाना है। चाहे हमसे जागनी हो या न हो परन्तु अपनी आत्मा में आतम के धनी अक्षरातीत को बसाकर उसमें मग्न होना है। ताकि जब हमारा

Nijanand App

यह झूठा तन छूटे तो हम भी अपनी परआतम में अपने धनी के चरणों में जग जाये। जैसा कि धनी ने फरमाया भी :-

हक हुकम हादी चलावतें, क्यों न लीजे अर्स राह।
मूल स्वरूप ले दिल में, उड़ाए दीजे अरवाह।।

छोटा क्या० प्र. १/१०६

जो रहनी - करनी करके सरकार श्री ने धाम धनी को रिझाया, हमें उसी चाल को लेना है। हर रूह को अपने धनी को रिझाना है और उस राह में चलते हुए जितनी भी कठिनाइयाँ आए उनकी परवाह किये बिना अपनी राह पर आगे बढ़ते जाना है और आखिरी मंजिल इत भी और उत भी दोनों ठौर धनी को पाकर अपने को धनं-धनं करना है।

श्रीमती कंचन आहुजा, जयपुर

मगरब का सूरज

लो इन्हीं चरणों के तले, जीना फिर आ गया। गहराते-गहराते रंग इश्क का, गहरा गया।।

इश्क के जाम किस कदर खालिस होते हैं, पीकर उनको मुरदे, फिर से जीवते हैं।
सतगुरू बन रूहअल्ला ने, तारतम समझा दिया।।१।।

इश्क में आपके इस कदर बरकत है, मर कर भी, फिर से जीने की हसरत है।
निसबत ने सांस-सांस को महका दिया।।२।।

इश्क में नित नये-नये रंग बदलते हैं, दूर नहीं कहीं, रहते हर पल संग-संग हैं।
पहले आशिक थे बने खुद, अब माशूक बना लिया।।३।।

पट हुकुम का ले, खेल सारा बनाया, हादी रूहों को यूं, गुझ साहिबी का समझाया।
पहचान हुकुम को, रूह से गुनाह कुबूल करवाया।।४।।

तार जो निसबत का, अव्वल से जुड़ जाये, तम का कोहरा, दो पल में छंट जाये।
मानों मसरक से नहीं, मगरब से सूरज निकल आया।।५।।

'रास' से 'प्रकाश' में कर 'खुलासा' रूह 'खिलवत', मारफत में जाती है,
'परिक्रमा' 'सागर' की कर, सिनगार से संज 'कलस' बन जाती है।
'सिन्धी' में देवें हुज्जत, मुद्दा 'कयामत' का, सारा शब्दों में आ गया।।६।।

लो इन्हीं चरणों तले, जीना फिर आ गया।
गहराते-गहराते रंग इश्क का, गहरा गया।।

नीरू खुराना, कानपुर

Nijanand App